

DPN 6773

गुरुमण्डल विधि GURUMANḌALA VIDHI

Title :

Run. No. 7498

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 25 x 10.5

Folios 10

Lines (in a page) 7

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

beg ~~विधि~~ ॐ नमः श्री गुरुसत्वायः नमः ॥ ॥ ह्यापां नसना काय ॥
P.T.O.

Col. प्रज्ञाशान वर देहं नमस्ते श्री वज्रयोगिनी ॥ ॐ
इति गुरुमण्डल विधि समाप्त ॥

गुरु मल विधि

॥ ३५ ॥

ॐ नमो जीवजसलायः नमः ॥ ॥ ज्ञायानमलाकाय ॥ पूजा हथिय ॥ ॐ किं
स्वाहा २ कायविश्वधनस्वाहा ॥ ॐ नमो गवगव पूसुवकता नाजायकथ
गताया अर्हं कसम्यक संवृद्धाय कथथा ॐ पुस्य २ महापुस्य सापुस्य पूसा
सं हवपुस्य वकिवन स्वाहा ॥ ॐ दंपुस्य हां जन संकल्पयामहं ॥ अनियाय
॥ संघमोसिद्धि कजाकि पूजायानाला हा निनापुयावतय ॥ ॐ वं वजादक
हं स्वाहा ३ था हि जा कमा कनमना हं सुनायेष्यामि सुधदिव्यनवादिना ३
आ ४ हं सर्वकथागक अहिषक समसुहं ॥ लंघने कनहा हायायः नमलाक

यावपूजा हथियना ॐ किं स्वाहा २ कायाविसाधनस्वाहा ॥ ॐ नमो गवगव
पुस्यकता नाजायकथागताया अर्हं कसम्यक संवृद्धाय कथथाः स्वादि ॥ अ
नियाय ॥ सां कृदा कयाव कया कथुन गथिय काका संतय ॥ ॐ आ ४
हं हि वजासन हं ॥ ॐ वं वं वं वं ॥ ॐ सर्वपायानपनय हं ॥ कुलसंकु
कथ ॥ मनिधनीवजिनिमहापुनिमव वक्र वक्र मां हं दृ २ स्वाहा ॥ ॐ वज
निलक हवन स्वाहा ॥ चरुमधुलिकावथ संतिय ॥ ॐ वजलवसलव हं
॥ जाकि स्वां लंघ मधुलसहायक ॥ दाने ग्वमय संवृता चसहि कं भिलं २

॥३॥

चसमार्जनं क्रान्ति सद्गतिपिलिकानपनयं॥ विर्यकीया थापनं ध्यानं न थुक्र
र्धयकचिलुकवर्धप्रहासूलखाजाजाहाहिनायानमितावलवलहन
कृतमनिमधुली॥ एवमुक्तनकवर्धुसर्वबागोविनिमुक्तसुवननजमिणि
सुखदवमिपनिकातिधनकनकस्मृद्धिजायनवाजवंतिसगतवलग
हश्रस्मिन्कायकमानेकृत्या॥ लीवमधुलथिल॥ मधुलखसूलधसर्वन
थागदश्रधिसंकुखाहा॥ मधुलश्रधिसुनयाय॥ उंचन्द्राकविमलखाहा
॥ मंदलसखीउयवावलिसनय॥ उंचजसखसर्वविद्यानूसादयहं॥ मधु

॥२॥

॥मधु॥

नथिलखाया॥ उंचहमाश्चमवनम॥ उंचमश्चमवनम॥ उंचसंस्कृत
श्चमवनम॥ यंपूर्वविदहायनम॥ वंजंस्त्रिपायनम॥ उंचलंभुपबलादा
वनम॥ उंचवेंडुरुवकुर्वनम॥ याउपदियायनम॥ नाउपदियायनम॥
लाउपदियायनम॥ उंचआउपदियायनम॥ उंचयगजवलायनम॥ उंचजस्व
लायनम॥ उंचलपूर्ववलायनम॥ वसिष्ठवलायनम॥ उंचलाचक्रवलायनम॥ उंच
लामहिबलायनम॥ वासर्वनिधायनम॥ उंचचंचंद्रायनम॥ संसर्गाय
नम॥ उंचश्रीवज्रगुप्तनम॥ यंचपहावपूजायाय॥ उंचवज्रपुष्पखाहा

॥ गुन ॥

वज्रधूपस्वाहा॥ वज्रगन्धस्वाहा॥ वज्रनेत्रदस्वाहा॥ वज्रदियस्वाहा॥ जा
किं वस्त्रं लंघनं मधुलं हाथक॥ चतुर्बलमयं मन्मथं दिवापरं प्रतिनेना
नानलसमाकिर्धुदध्ननूनदायनगुनस्य वृद्धधर्मसंघं हृद्यं च तथैव
चनिर्यातयामि हावनसंपूर्णं बलमधुलं॥ नाक॥ जाकिं कायाविवंति
यानां च॥ उं आ ४ हं श्रीमन् वज्रसतगुनं वनचनधकमलाय सम्यक् सुना
यलासनकनायनमहं नमस्तु नमानम॥ रुगलाहं लोनमस्यामि श्रीगु
ननाथं पुसिदमायस्य प्रसादकिं बद्धरुलितात्तुमत्वं च तपुलायविक

॥ ३ ॥

॥ नक्ष ॥

नापुहं लंघका नापरं गुना विनधनिसविला समचेतस्मिन्मकुनिलयं
गुनं हास्यवाया गुनं नमस्तु॥ उं नमबुद्धाय गुनं नमधर्माय नानधि न
मासंघाय महस्तु मन्त्रिहायिसततं नमसर्वबुद्धं नमस्यामि धर्मं च जिनला
घिनं संघं वधिलसंयन्त्रा बलं गुयनमस्तु॥ बलं गुयं मसर्वसर्वप्रतिदिसा
मघं अनुमाय जगत्पूरुषं वृद्धा वाधोदधमना आवाधो सनधं यामि वृद्धध
र्मगह्मदमा वाधिचिरु कनामघसाय नार्थपुसिदमा उतपादयामि यन
संवनवाधिचिरु निमं गुयामि अरुसर्वसत्यानां च रुखां न विरुवनवाधि

॥ ३३ ॥

चालिकां वृक्षं वहं जगता हिताय ॥ दधनां सर्वपापानां पुद्गलानां चान
मादिनां कृतापवासां च निष्कामि आर्याणां गतावधं मया वादनमूधनय
त्किंचित् कृपापसागमय कृत्वा वयसा वयस्य कृत्वा वयसवच ॥ ननु दयं द
धनामवनाथनामगतस्मिन् ॥ कृतां जलिद्वयहितं पुष्टिपतपुनपुन ॥
अस्यैव मत्तयं ननु पुनि गङ्गा नयकं ॥ ननु इदमिदं नाथं न कर्तुं वापुन
मया ॥ जथा कृतं भागताया अहं न सम्यक संवृद्धं ननु वृद्धं च कृत्वा न
मिपत्तं नितकृत्वा वंमूलं जज्ञानिकं ज्ञानिकाय जगत्स्वत्वा वं जया धर्मतया

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

सविद्यता ॥ तथा अन्मादनतकृत्वा लनिसमन्तं नया सम्यक संवाधे कथा हं यनि
क्षमिंतं यनि क्षमया ॥ तथा समानत समान काललाकस्य दूषं च सुखादयं च सतु
धसया तु सगतिरुतमपुकां च ज्ञेयवता ॥ दृष्टुं नानुस्मृतिमागता वापुष्ट
कथा जागमया गता वा सर्वपुका वं जगता हिताय कुर्यामक संसख संहिताय
लं वक्तुं नयवली ॥ अचमनं प्रक्रमनं पुनि कृत्वा ॥ तथा ये कालन वायु
मधुलं ॥ ननु यनि वं जाग अग्रिम धुलं ॥ ननु यक आका वं जं सिलसिपस हां जने
ननु गता निय निपुनि तं उं गुं ख हं ला मां पां नो वं काल जाग पं चाम नयं च पुदि

॥ गुरु ॥

पयःशतं ॥ ऊर्ध्वहा ॥ बलिस्त्रिंशदाय ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ ऊमाय स्वाहा ॥ वनूक्षाय
स्वाहा ॥ कुवमाय स्वाहा ॥ अरुणाय स्वाहा ॥ नैऋत्याय स्वाहा ॥ वायुवाय स्वाहा ॥ इन्द्राय
नाय स्वाहा ॥ उर्ध्ववक्रहा स्वाहा ॥ सूर्याग्राधियनिय स्वाहा ॥ चन्द्रानक्रहाधि
पन स्वाहा ॥ अर्धपृथिविस्व स्वाहा ॥ नागस्या स्वाहा ॥ असनस्थ स्वाहा ॥ ऊ
रुहा स्वाहा ॥ सर्वदिगदक्षदिगलाकपालास्व स्वाहा ॥ पंचपहा न पूजा
विंशतिय ॥ विनासं वृद्धविस्वदिवसकलधनं वासिया विन्दुलघं मेरियं
चाननूषं मिलसिवननं संश्रुषावं च गतं ॥ पद्मासंदधुनूपंकुलितलव

॥ ५ ॥

॥ ५ ॥

पूर्ववजिर्धौ हिमनादं विष्मनं ग्गाननूयं निहन्तु वरुणं पंचमूर्तिप्रथमा ॥
बलिस्त्रिंशदाय ॥ ऊर्ध्वहा ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ ऊमाय स्वाहा ॥ वनूक्षाय
स्वाहा ॥ कुवमाय स्वाहा ॥ अरुणाय स्वाहा ॥ नैऋत्याय स्वाहा ॥ वायुवाय स्वाहा ॥ इन्द्राय
नाय स्वाहा ॥ उर्ध्ववक्रहा स्वाहा ॥ सूर्याग्राधियनिय स्वाहा ॥ चन्द्रानक्रहाधि
पन स्वाहा ॥ अर्धपृथिविस्व स्वाहा ॥ नागस्या स्वाहा ॥ असनस्थ स्वाहा ॥ ऊ
रुहा स्वाहा ॥ सर्वदिगदक्षदिगलाकपालास्व स्वाहा ॥ पंचपहा न पूजा
विंशतिय ॥ विनासं वृद्धविस्वदिवसकलधनं वासिया विन्दुलघं मेरियं
चाननूषं मिलसिवननं संश्रुषावं च गतं ॥ पद्मासंदधुनूपंकुलितलव

गंतु ॥ वसिष्ठनाम ॥ हानहायक ॥ उं नमो बल्लुनाय चंद्रवज्रयानय महावज्रका
 ॥ पुं ॥ हाय इक्षकटहेनवाय अक्षिसूक्षलप बसपाभग हिरुहसाय अमृतकृ
 लीखखखाहि २ तिसृ २ वन्ध २ दह २ य च २ गज २ विस्फोटय २ सर्वविघ्नविना
 यकानां महागणपतिजिविगांधकावाय हूं हूं रु २ स्वाहा ॥ नाक ॥ कसिं नसिं
 पूजा नाय ॥ स्वादी ॥ महतिरुय ॥ संघं धउ मन्थापि अंति पूजा ॥ स्वां नय ॥
 ॥ स्ववसुधा सर्वधर्मानां स्वरावसुधा हूं ॥ सत्यताहानवज्रस्वरावास्तुका हूं ॥
 ॥ पुं ॥ उं हगवनधी अमृतक सर्वविद्या बाजं नमस्तु न कर्तुमिहनाथं ॥

धुलकवृक्षममकसिखा अमृतं पाय रुक्माकं पूजनाय च नम हगवनयसादकं
 कर्तुमहर्षिजा चं न्यामं तु दवता वज्रधूपनिर्योतयामि वज्रधूपं पुनिक स्वा
 हा ॥ निमं तुना ॥ अद्य मसरु लंज नं सरु लंजि विरं च मसमय सर्वदवाना रु
 विना हं नमो अय अग्रमदिवस्व रुयज्जना सवर्कन सनिपाफ रुवडवसर्व
 वृद्धं निमं तुनाथ ॥ स्वधन अंति वै थापि नमो वाय ॥ अमं धुलधिल ॥ उं वज्रम
 हूं वज्रममय वज्रवधसुवधवज्रसुवर्धुजलधाम स्वाहा ॥ सिद्धिक ॥ उं अ ४
 वज्रसिंधु निलक रुखन स्वाहा ॥ जंजं का नय ॥ वज्रनावं कालपूजामघसम

वा २

॥ गुरु ॥

इरु नद्य समयहं ॥ स्वां काय ॥ समर्थ स्वस्ति वाक् नृणां वृद्ध स्वस्ति दवा भुक्
का स्वस्ति सर्वा निरुक्तानि सर्व का वं नि संतु व वृद्ध पुं न्या न ता व न द व ता नाम
न न च जा जा अर्थ सम द पु नः सर्वो अ य स म र्था तां स्वस्ति य द तां तु स्वस्ति वा
रथो च नु य द स्वस्ति वो व ज तां मा र्ग स्वस्ति व स्या म न पु च स्वस्ति वा शो स्वस्ति द
वा स्वस्ति म धं दि न स्ति न सर्व र्थ स्वस्ति ता ह वं तु मा घ च यो पा य मा ग म सर्व
सत्वा सर्व प्राप्ता सर्व रूपा ध क व ला सर्व र्थे स खि न सं तु सर्व सं तु नि ना नु म
या सर्व रूपा नि य धं तु मा घ च यो पा य मा ग म ॥ जानि ह रूपा नि समा ग ता

॥ ७ ॥

॥ म ॥

निस्ति कानि रूपा प्र मा त वि क्रु कृ वं तु मे नि क्ष त रं पु जा स द वा च वा शो च च
वं तु ध र्म ॥ हा जा का य ॥ उं व ज ने वी य स्वा हा ॥ स म य का य ॥ ने वी दं सर्व सं रु
गं स्वा ज वृ ज स म पु य र्म गं ध व स्व पि ता द द मि न न च क च द म धि स म या चा
र्ध व ज ने वी य स्वा हा ॥ धा वा का य ॥ उं न मा त ग व न वी न वी न व्ध वा य हं रु दः
म हा क वा य हं रु दः क द म कू ट ध वा य हं रु दः व्या धु च र्मा न हं रु दः ॥ म क वि
या नि गु वि ना त्मा व रु व त्वा का खान वा दि पा रु क मा न हा ला जा दि य मा
ला ल च यं नि रु व ज दि य नि र्मा न या मि व रु दि यं पु नि च्छ स्वा हा ॥ ना यं पु जा

॥ ७४ ॥

॥ जधर्मा हनुपुत्रावाहवज्रकथां जानिनाधयवंवादिमहाशुदर्ना ॥ जादि
लंघस्वां धुनापूजायाय ॥ अकालमुखसर्वधर्मा नांमाशं नूत्वनत्वा ॥ अ
हंरुद्रस्वाहा ॥ दंडनाकाया ॥ मंजुश्रीकुमावहनाय वाधिसत्वाय महास
त्वाय महं कावृधिकाय तं नूदवदकनादानसे अरुद्रकयासि है ॥ स
द्व ॥ उं वज्रसत्त्वसमयमनूपालय वज्रसत्त्वगनप्रतिष्ठा दृढा मरुवसु
धाम मरुवसूयधाम मरुवधनूवक मरुवसर्वसिद्धिमप्रंचु सर्वकर्मसूच
मचिन्मथीयेकबूहं हहहहहाह गवनसर्वकथागनवज्रमाममंचवजि

॥ ८ ॥

॥ म ॥

हवमहासमयसत्त्व ॥ दंडा पूजा ॥ स्वां रुय ॥ धूं रुय ॥ निमंजुनायाय ॥
सनानयाय वाक् ॥ उं जतुमंगलं सकलसत्त्व हृदि स्थिरस्य सर्वोत्तमकस्य
वलधर्मकुलाधिपस्य निखषदायवाहिरस्य रुतुमंगलं हवतुरुयवमा
हिषक ॥ उं ओं जिंख हलासां यां तावं कालजातपंचामरुपंचयदिपंपसा
॥ कंकन ॥ प्रविस्मृसमाधर्मा आक्राम्धाहिनाविला अगाया अनू
नाप्याच हनु कर्मसमनुहवा ॥ स्नानलंघकाय ॥ उं आसर्वकथागनवज्र
धकसमश्रु ॥ धामंदलधिल ॥ सिद्धनिक ॥ जजं का रुय ॥ स्वां रुय ॥

॥ गुर्व ॥

॥ हाजा काय ॥ समय काय ॥ धाला काय ॥ मरविष ॥ नाय पूजा ॥ स्वां जा
किल यथु नागा जा मरुय ॥ मरु कन ॥ चाक्र पूजा ॥ किशाल किन ॥ ससगु
भिलवान मरु कनं सिधयक ॥ क्रमा कन ॥ सघं काय ॥ मह निस्वां नरु
या काय ॥ आदो कल्यानं मय कल्यानं पुदवसां त कल्यानं सार्थं स्ववंजनं
कवलं पविर्धु पविर्धु यदवजात वंस्त्र चर्य संप्रकास हि नक्षु म आयुव
द्विज स्ववृद्धि वृद्धि विर्या स्वस्वा चैव जन धन संता न्य कि ह स वर वृद्धि ॥
सिद्धि न्य ॥ काय किय याय ॥ चियं थियः समय काय ॥ हाजनय ॥ ॥

॥ ६ ॥

॥ म ॥

स्वान का काय ॥ रागय काय ॥ ॥ कि गुर्व मधुन विधि समापन ॥ ० ॥
सील यवान गु ॥ सर्व ह हान संदो हं ऊ गद र्थ पुष्पा दकं चिंता मनि विवि हं
धी संव वं न मरुता ॥ व्यावत विस्व म हा ग्ग नं सर्वा मनि मदा स्मि तं कृपा का
रुम हा वृद्धं धी मय वं न मरुता ॥ न स्वां धी वज वा ना हि मं तु मूर्ति जि न ध्व नि ॥
अस्मं ता व व दा हि मा विद्धि सिद्धि बल पुदा नु वं का वं समा सि लं स ह जा आ
न च वृषि नी पु हा हान व व द हं न मरु धी वज या गि नी ॥ ॥ ॥ ॥

महतिः सधंधडा मकः ७ अंति
ॐ कर्क ७ कावि
ॐ पाश ७ अयि
ॐ प्रजाप
याहागु
ॐ